छोटानागपुर में आदिवासियों एवं सदानों में शिक्षा का विकास (1891 ई. से 2000 ई. तक) : एक तुलनात्मक अध्ययन

पीएच. डी. पंजीयन हेतु प्रस्तावित शोध–प्रबंध का सार

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

सामाजिक विज्ञान संकाय

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद, (झारखण्ड)

शोध निदेशक

डॉ. कौशल कुमार

विभागाध्यक्ष

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय

धनबाद, (झारखण्ड)

शोधार्थी

वासिफ शाह

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय

धनबाद, (झारखण्ड)

छोटानागपुर में आदिवासियों एवं सदानों में शिक्षा का विकास (1891 ई. से 2000 ई. तक) : एक तुलनात्मक अध्ययन

भूमिका (Introduction) :

छोटानागपुर में शिक्षा की ओर लोगों का झुकाव काफी लंबे समय से रहा है। प्राचीन काल की बात करें, तो ऐसा हम पाते हैं कि गुरूओं की कुटियाओं, आश्रमों तथा बौद्ध मठों में शिक्षा ग्रहण करने की व्यवस्था होती थी। मध्यकालीन छोटानागपुर में मकतबों एवं मदरसों में बच्चे शिक्षा प्राप्त करते थे। छोटानागपुर में आधुनिक व पाश्चात्य शिक्षा की शुरूआत ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन काल से हुई थी। सर्वप्रथम 1781 ई. में बंगाल के गवर्नर–जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने फारसी एवं अरबी भाषा के अध्ययन के लिए कलकत्ता में एक मदरसा खुलवाया था (ग्रोवर, यशपाल एवं मेहता, 2006, 254)।[1] छोटानागपुर में पश्चिमी शिक्षा की शुरूआत 1831 ई. में क्लिवलैंड कथबर्ट और नीभ ने किया था। छोटानागपुर में 1834 ई. में साउथ–वेस्ट–फ्रंटियर की स्थापना हुई थी। तब इनका पहला एजेंट कप्तान टी. विल्किंसन, इस क्षेत्र में शिक्षण संबंधी सुविधाओं की कमी पर आश्चर्यचकित था। कप्तान टी. विल्किंसन ने राँची में विद्यालय खोले एवं छोटानागपुर के अन्य भागों में भी विद्यालय खोलने का सुझाव दिये थे। परंतु, पाश्चात्य शिक्षा की नींव विधिवत इस राज्य में जर्मन मिशन ने रखी थी। छोटानागपुर में 1845 ई. में आदिवासियों में इल्म की रोशनी फैलाने के लिए प्रथम बार जर्मन मिशनरियों का प्रवेश हुआ था। जर्मन मिशन ने 1846 ई. में डोरण्डा, राँची में एक विद्यालय खोला था (महतो, 1968, 221)।[2] छोटानागपुर में बसने वाले स्थानीय आर्य भाषी लोगों को सदान कहा जाता है, जो नागपुरी, खोरठा, पंचपरगनिया और कुरमाली भाषा को अपनी मातृभाषा के रूप में बोलते हैं। इस तरह यह कहा जा सकता है कि सदान छोटानागपुर के गैर जनजातीय हिन्द–आर्य भाषी जातीय समूह के हैं। सदानी जातियों की मूल जाति नागवंशियों ने छोटानागपुर में राज्य स्थापित किए थे। खोखरा राजा के पहले राजा नागवंशी फणीमुकुट राय थे। इन्होंने मुण्डाओं के सहयोग से राज्य

की स्थापना किये थे (साहु, 2015, 5)।[3] इस प्रकार सदानी जातियों के समानांतर छोटानागपुर में जनजातीय शिक्षा भी बहुत पुरानी है।

1875 ई. में विधिवत राँची जिला स्कूल का आरम्भ हुआ था। छोटानागपुर में महाविद्यालयस्तरीय शिक्षा डबलिन मिशन ने किया था। डबलिन मिशन ने 1899 ई. में संत कोलम्बस कॉलेज की स्थापना हजारीबाग में करवाया था। प्रारंभ में इस कॉलेज में 13 विद्यार्थी थे। रे. जे. एच. मर्रे पहला प्राचार्य थे। उस समय कलकत्ता यूनिवर्सिटी से जुड़ा छोटानागपुर का यह एकमात्र कॉलेज था (वीरोत्तम, 2016, 577)।[4] लॉर्ड इरविन ने 1926 ई. में धनबाद में भारतीय खनि विद्यापीठ (वर्तमान में आइआइटी–आइएसएम) की स्थापना करवाये थे (अम्बष्ट, 1940, 21)।[5] 7 जुलाई, 1944 ई. को राँची में संत जेवियर इंटर कॉलेज की स्थापना हुई थी। 1948 ई. से इस कॉलेज में स्नातक भी होने लगा था। 1 अगस्त, 1946 ई. को राँची गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज की स्थापना हुआ था। किन्तु, कॉलेज का विधिवत उद्घाटन 28 सितम्बर, 1946 ई. को शिक्षा मंत्री बंद्रीनाथ वर्मा ने किये थे। 1948–49 ई. में इस कॉलेज का नाम बदलकर राँची कॉलेज रखा गया था (वीरोत्तम, 2016, 578)।[6] सिन्द्री (धनबाद) में बिहार तकनीकी संस्थान (बी.आइ.टी) की स्थापना नवम्बर 1946 ई. में हुई थी (बोबेन, 1949, 114)।[7] देवघर में पहला कॉलेज 1951 ई. में खुला था (वीरोत्तम, 2016, 577–578)।[8]

आजादी से पूर्व छोटानागपुर में फिरंगियों ने ब्रिटिश पद्धति का सूत्रपात कर निःसंदेह ही यहाँ की शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा प्रदान की थी। 1947 ई. के बाद भारत में प्राइमरी शिक्षा से हाइयर एजुकेशन तक, तकनीकी शिक्षा से लेकर वोकेशनल एजुकेशन तक में कई अभूतपूर्व उल्लेखनीय बदलाव हुए। फलतः, एजुकेशन सेक्टर विस्तृत होने के साथ बहुआयामी भी हो गया है।

शोध समस्या का वृतांत (Statement of the problem):

- ईसाई मिशन प्रदत्त शिक्षा से अलग छोटानागपुर में लोकशिक्षा में भी अभिवृद्धि हुई थी। ऐसा उल्लेख मिलता है कि छोटानागपुर के

राजघराना के प्रमुख भी, मिशनरियों व शासन के इतर, शिक्षा के प्रचार–प्रसार में रूचि लेते थे। प्राइमरी एजुकेशन में प्रगति के साथ–साथ सेकेंडरी एजुकेशन की भी बढ़ोतरी हुई। आगे चलकर, 1899 ई. में कॉलेजस्तरीय शिक्षा की शुरूआत हुई। यह वर्णन झारखण्ड : इतिहास एवं संस्कृति में वर्णित है (वीरोत्तम, 2016, 578–579)।[9]

- छोटानागपुर में जर्मन मिशन ने शिक्षा की शुरूआत की थी। रांची में उनके द्वारा पहले विद्यालय की नींव रखी गई थी। इसके बाद एस. पी. जी. मिशन (सी. एन. आई.) ने छोटानागपुर में स्कूल एवं कॉलेज की स्थापना किया। डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन ने हजारीबाग में संत कोलम्बस कॉलेज की स्थापना करवाया था। इसके बाद छोटानागपुर में रोमन चर्च ने राँची में 1944 ई. में जेवियर इंटर कॉलेज की स्थापना करवाया था। यह वर्णन हिन्दी शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में ईसाई मिशनरियों का योग नामक पुस्तक में वर्णित है (सिंह, 1985, 149)।[10]
- छोटानागपुर में आदिवासी नारियों की माली स्थिति उनके बच्चों की शिक्षा के स्तर का समानुपाती बताया गया है। श्री उराँव के अनुसार खानाबदोशी आदिवासी महिलाएं तो अपने बच्चों के प्रारंभिक एजुकेशन ग्रहण करने पर ही संतुष्ट हो जाती हैं। जबकि कारीगर आदिवासी महिलाएं, कृषि श्रमिक और औद्योगिक श्रमिक आदिवासी महिलाएं द्वारा अपने बच्चों को मैट्रिक तक की शिक्षा दिलाने के बाद ही संतोष हो जाती है। लेकिन वे आदिवासी महिलाएं जो कृषि का कार्य करती हैं वे अपने बच्चों में इन्टरमीडिएट उत्तीर्ण चाहती हैं। सर्विस क्षेत्र में नियोजित महिलाएं तो अपने बच्चों को स्नातक तथा स्नातकोत्तर तक शिक्षा देना चाहती हैं। अतः शिक्षा और इनके जीवन स्तर के मध्य सीधा संबंध परिलक्षित होता है। यह वर्णन एडुकेशन ऑफ ट्राइबल वोमेन में वर्णित है (उराँव, 1993, 77)।[11]
- छोटानागपुर में राजा एवं जमींदार भी मिशनों और सरकारों के अतिरिक्त शिक्षा के विस्तार में रूचि ले रहे थे। ऐसे लोगों में पंडरा की रानी, नागवंशी राजा, रामगढ़ राजा, पाकुड़ राजा तथा मानभूम के राजा प्रमुख थे। राँची में एक स्कूल भवन बनाने के लिए नागवंशी राजा ने

1000 रूपये दिये थे। स्थानीय लोगों ने भी 56 विद्यार्थियों के साथ एक वर्णाकुलर स्कूल खोले थे। इस प्रकार छोटानागपुर में गैर–आदिवासी मूलवासी (सदानों) की शिक्षा की प्रगति हो रही थी। यह वर्णन झारखण्ड के सदानों का इतिहास नामक पुस्तक में वर्णित है (साहु, 2015, 91–92)।[12]

- आदिवासी, सदानों से शिक्षा में पिछड़े हुए हैं। यह वर्णन राँची डिस्ट्रीक्ट गजेटियर में है (कुमार, 1970, 173)।[13]
- छोटानागपुर में आदिवासियों एवं सदानों में शिक्षा का विकास पर शोध नहीं हुए हैं। अतः, इस पर शोध करने की जरूरत है।

विषय–विवरण (State-of-the-art):

शिक्षा किसी भी व्यक्ति के लिए बुनियादी जरूरत है। इसके अभाव में प्रगति की योजना सफल नहीं हो सकती है। शिक्षा विकास की रीढ़ है। अच्छी–शिक्षा अच्छे समाज का निर्माण करती है, तो दूसरी ओर अच्छा समाज भी अच्छी शिक्षा व्यवस्था को प्रतिरूपित करता है। झारखण्ड में आदिवासियों एवं सदानों पर कुछ पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है। इसका वर्णन इस प्रकार है। (पाण्डेय, 1993, 218) की पुस्तक में आदिवासी तथा हरिजन के मध्य शिक्षा तथा रोजगार के बीच तुलनात्मक अध्ययन करके बताया कि सदानों में शिक्षा का स्तर आदिवासियों से अधिक है।[14] (उराँव, 1993, 77–78) की पुस्तक में बताया है कि बिहार के छोटानागपुर में आदिवासी नारियों की माली स्थिति उनके बच्चों की शिक्षा के स्तर का समानुपाती बताया गया है।[15] (अहमद, 1997, 124–125) ने लिखा है कि सदानों एवं आदिवासियों को शिक्षा का समुचित लाभ नहीं मिल रहा है।[16] (वीरोत्तम, 2016, 582) ने लिखा है कि सदानों एवं आदिवासियों की शिक्षा में बढ़ोतरी हुई है, फिर भी सदानों की शिक्षा का प्रतिशत, आदिवासियों की शिक्षा के प्रतिशत में अन्तर बना हुआ है।[17] (वर्मा, 1931, 69) की पुस्तक में आदिवासी छात्रों के उचित मार्गदर्शन न मिलने के कारण को ही उच्च शिक्षा में अधिक भागीदारी न होना मानते हैं। इनका मानना है कि अधिकांश जनजातीय बच्चे मार्गदर्शन के अभाव में स्कूली शिक्षा तक ही सीमित रह जाते हैं। एक ओर हाइयर एजुकेशन इंस्टिटयूशन का अभाव, इंफॉर्मेशन की अल्पता इन्हें अपने इलाके में सीमित रखता है,

जिससे इनका विकास सीमित हो जाता है और उच्च रोजगार स्तर में इनकी भागीदारी कम पाई जाती है।[18]

(प्रसाद, 1961, 204–205) ने लिखा है कि आदिवासियों की स्वयं की जीवन पद्धति एवं हमारी शिक्षा पद्धति आदिवासी बच्चों को स्कूल की ओर आकर्षित नहीं कर पाती। यह आवश्यक है कि हमारी शिक्षा नीति ऐसी हो जो उन्हें स्कूल की ओर आकर्षित कर सके। आदिवासी गाँव में ज्यादातर रहते हैं। अतः उन पर आधुनिकता का बहुत कम प्रभाव पड़ा है, इस कारण भी वे शिक्षा के महत्व को समझ नहीं पाते थे।[19] (साहु, 2015, 192–193) ने लिखा है कि सदानों की विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डाला और निष्कर्ष निकाला कि शिक्षा के अभाव और जानकारी की कमी की वजह से उन्हें शोषित होना पढ़ता है। उन्होंने बताया है कि सदानों के पिछड़ेपन को दूर करने तथा उनकी माली हालत में सकारात्मक परिवर्तन के लिए औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा की आवश्यकता है।[20] (खलखो, 2010, 54–55) ने लिखा है कि सदान एवं आदिवासी की बच्चियों में इनके बच्चों के बरक्स लेवल ऑफ एजुकेशन कमजोर होता है। प्राइमरी स्कूलों में इनकी बच्चियों का रजिस्ट्रेशन भी अन्य समुदाय की तुलना से कम देखा गया है। कारण, शिक्षा की ओर झुकाव कम और रोजी–रोटी की समस्या बाधा उत्पन्न करती है।[21] इस प्रकार छोटानागपुर में शिक्षा पर कुछ काम हुए हैं। किन्तु, छोटानागपुर में आदिवासियों एवं सदानों में शिक्षा के विकास पर शोध नहीं हुए हैं इसलिए इस पर शोध की आवश्यकता है।

<u>शोध समस्या का अन्वेषण (Problem to be investigated)</u>:

- छोटानागपुर के आदिवासियों में धर्मांतरित ईसाई आदिवासियों, सरना आदिवासियों एवं सदानों में शिक्षा की शुरूआत एवं प्रगति को ऐतिहासिक अध्ययन द्वारा पूरा करना।
- ईसाई मिशनरियों ने छोटानागपुर क्षेत्र में प्राइमरी स्कूल, मिडिल स्कूल, हाई स्कूल, कॉलेज, गर्ल्स स्कूल, गर्ल्स कॉलेज, टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज (बी. एड.) खोले थे। इतना ही नहीं इन्होंने शोध संस्थान भी खोले थे। इसे उजागर करना है।

- सरना आदिवासियों एवं इनके महिलाओं में शिक्षा का विकास कम हुआ था। इसे भी उजागर करना है।
- सदानों की शिक्षा की प्रगति में छोटानागपुर के राजा एवं जमींदार आगे आए थे। यहाँ के राजघरानों के प्रमुख ने स्कूलों की शुरूआत की थी। इन स्कूलों में बच्चों को फीस नहीं लगती थी। इस तरह सदानों में शिक्षा का विकास होने लगा। इसे उजागर करना।
- सदानों में शिक्षा के विकास आदिवासियों से अधिक हुआ था। इसे उजागर करना।

शोध का उद्देश्य (Objective of the research):

- छोटानागपुर में ईसाई मिशनरियों, ब्रिटिश सरकार, बिहार सरकार एवं भारत सरकार ने आदिवासी एवं सदानों के लिए जितने भी स्कूल–कॉलेज खोले थे। इसे उजागर करना।
- ईसाई मिशनरियों ने छोटानागपुर में स्कूल, कॉलेज एवं टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज खोले थे। इसे उजागर करना।
- छोटानागपुर क्षेत्र में आदिवासियों के पठन–पाठन के लिए मिशनरियों द्वारा स्कूल स्थापित किए गए थे। कालांतर में, इनके विकास के लिए अंग्रेजी सरकार, बिहार सरकार एवं भारत सरकार ने प्रयास किये। इसे उजागर करना।
- छोटानागपुर क्षेत्र में सदानों में शिक्षा की नींव यहाँ के राजघरानों के प्रमुख ने डाली थी। आगे चलकर मिशनरियों के संपर्क एवं बिहार सरकार एवं भारत सरकार के सहयोग से इनका विकास हुआ। इसे उजागर करना।
- छोटानागपुर में गैर आदिवासी मूलवासी (सदान), आदिवासियों के बनिस्बत पढ़ाई में अग्रणी थे। इसे उजागर करना।

शोध–प्रश्न (Research question):

- क्या छोटानागपुर में शिक्षा का आरंभ ईसाई मिशनरियों, अंग्रेजी सरकार, छोटानागपुर के राजाओं, बिहार सरकार या भारत सरकार ने किया था?
- क्या पहली बार छोटानागपुर में महाविद्यालय ईसाई मिशनरियों ने खोले थे ?
- क्या आदिवासियों ने शिक्षा ग्रहण करके मुख्यधारा से जुड़ गए हैं। उच्च पद हासिल कर पाए थे ?
- क्या यहाँ के राजाओं ने गैर आदिवासी मूलवासी (सदान) में पठन–पाठन की शुरूआत करवाई थी ?
- आदिवासी, सदानों से शिक्षा में क्यों पिछड़े हैं ?

शोध प्रविधि एवं रूपरेखा (Research design & methodology):

प्रस्तावित शोध–प्रबंध को ऐतिहासिक विधि से पूर्ण किया जायेगा। जैसे छोटानागपुर में आदिवासियों में शिक्षा का विकास ईसाई मिशनरियों के आगमन के बाद हुआ था। 2000 ई. तक इसे लगातार अंग्रेजों, ईसाई मिशनरियों, बिहार सरकार एवं भारत सरकार ने बढ़ाया। इस शोध–प्रबंध के लिए तुलनात्मक विधि का भी प्रयोग किया जाएगा। जैसे सदानों में शिक्षा का विकास सरना आदिवासियों से अधिक हुआ था।

प्रस्तावित शोध–प्रबंध के लिए प्राथमिक स्रोतों जैसे बिहार सरकार की रिपोर्ट, बंगाल सरकार की रिपोर्ट, जनगणना रिपोर्ट, छोटानागपुर मिशन का रिपोर्ट, बंगाल ऐनुअल ऐडमिनिस्ट्रेटीव रिपोर्टस, एस. पी. जी. मिशन चर्च, राँची का क्वाटर्ली पेपर्स इत्यादि से छोटानागपुर में आदिवासियों एवं सदानों में शिक्षा का अध्ययन विश्लेषनात्मक विधि से किया जायेगा। यह शोध–प्रबंध मूल स्रोतों के माध्यम से पूरा किया जाना है।

प्रस्तावित शोध–प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभक्त करने की योजना है। ये निम्नांकित हैं–

प्रथम अध्याय – भूमिका

द्वितीय अध्याय – छोटानागपुर में शिक्षा का एक ऐतिहासिक अध्ययन

तृतीय अध्याय – शिक्षा की प्रगति में ईसाई मिशनरियों की भूमिका

चतुर्थ अध्याय – छोटानागपुर में आदिवासियों के शिक्षा के क्षेत्र में प्रसार एवं विकास

पंचम अध्याय – छोटानागपुर में सदानों के शिक्षा के क्षेत्र में प्रसार एवं विकास

षष्ठ अध्याय – आदिवासियों एवं सदानों में शिक्षा के विकास का तुलनात्मक अध्ययन

सप्तम अध्याय – उपसंहार

ग्रंथ–सूची

<u>डाटा संग्रहण एवं विश्लेषण में उपकरणों का प्रयोग (Tools to be used in the collection of data and analysis)</u> :

प्रस्तावित शोध–प्रबंध में मानचित्र, ग्लोब चित्र, एटलस इत्यादि के सहायता से इतिहास संबंधी प्रसंगों की दूरी, दिशा, सीमाएं व प्राकृतिक स्थितियों को ज्ञान कराया जा सके, जिससे कि वे संबंधित प्रसंगों की वजहों के साथ जुड़ाव स्थापित कर सके तथा उस समय की सामाजिक और आर्थिक स्थिति से अवगत हो सकें। इन उपकरणों की सहायता से तथ्यों का स्थानीयकरण होता है और वे ऐतिहासिक हो पाते हैं।

शोध–प्रबंध की सामग्री पश्चिम बंगाल राजकीय अभिलेखागार, कलकत्ता, नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता, बिहार केन्द्रीय अभिलेख कार्यालय, पटना, झारखण्ड राजकीय अभिलेखागार, राँची ईसाई मिशन अभिलेख, राँची केन्द्रीय

पुस्तकालय, राँची अलबर्ट कॉलेज, राँची, टी. आर. आई., राँची में राजभाषा (हिन्दी) एवं इंग्लिश में उपलब्ध है। इस शोध–प्रबंध को पूर्ण करने के लिए हम ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक दोनों विधियों का प्रयोग करेंगे।

प्रस्तावित शोध कार्य के महत्व (Significance of proposed work):

इस शोध–प्रबंध का महत्व पूरी शिक्षा जगत व इतिहास के लिए है। उदाहरणस्वरूप शिक्षा का महत्व सभी कालों में रहा है। आधुनिक काल में छोटानागपुर में शिक्षा की प्रगति के लिए मिशनरियों ने स्कूल खोले थे। इस विद्यालय में हिन्दी एवं अंग्रेजी के साथ–साथ आदिवासी भाषाओं की भी शिक्षा दी जाती थी।

इस शोध कार्य का महत्व समाज के लिए ही है। उदाहरणस्वरूप जो आदिवासी ईसाई बन गए, उनका केवल धर्म–परिवर्तन ही नहीं हुआ, बल्कि उनके मूल्यों तथा विश्वासों और व्यवहार में भी परिवर्तन हुए। यह परिवर्तन मात्र शिक्षा के द्वारा हुआ। इस तरह यह कहा जा सकता है कि सदानों की अपेक्षा ईसाई आदिवासी अधिक शिक्षित हैं। सदानों में मुसलमान ईसाइयों से दूरी बना के रहे थे जिस कारण से उनमें भी शिक्षा का विकास कम हुआ था।

समकालीन ज्ञान में योगदान (Contribution to the existing knowledge):

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि छोटानागपुर में आदिवासियों एवं सदानों में शिक्षा का विकास कंपनी के शासन काल में हुआ था। जब क्लिवलैण्ड कथबर्ट ने चाईबासा में एक विद्यालय खोला था, लेकिन इस विद्यालय में अधिकांश विद्यार्थी ईसाई धर्म में धर्मांतरित आदिवासी थे। इस विद्यालय में पढ़ने वाले गैर ईसाई आदिवासियों एवं सदानों की संख्या कम थी। इसी प्रकार इस राज्य में पश्चिमी शिक्षा की नींव विधिवत जर्मन मिशन ने डाली थी। इसके बाद एस. पी. जी. मिशन बाद में इसका नाम बदलकर सी. एन. आई. (चर्च ऑफ नार्थ इण्डिया) मिशन रखा गया था, रोमन कैथोलिक मिशन इत्यादि ने इस राज्य में बहुत से स्कूल, गर्ल्स स्कूल, कॉलेज तथा

महिला कॉलेज खोले थे। इस मिशनरी विद्यालय में पढ़ने वाले अधिकांश विद्यार्थी ईसाई होते थे, लेकिन बाद में इस मिशनरियों के स्कूल में आदिवासी एवं गैर आदिवासी मूलवासी (सदान) बच्चों की संख्या भी बढ़ने लगी थी। 1947 ई. तक शिक्षा में विकास उन आदिवासियों को अधिक हुआ था, जो ईसाई धर्म में धर्मांतरित हो गए थे। 1947 ई. के बाद सदानों में शिक्षा का स्तर आदिवासियों से अधिक होने लगा था।

भविष्य के कार्य (Future work):

प्रस्तावित शोध–प्रबंध में भविष्य हेतु कार्य है कि आदिवासी परिवारों में एजुकेशन के साथ ही ट्राइबल इलाकों की भी प्रगति करनी होगी, जिससे उस क्षेत्र में निवास कर रहे सभी वर्गों अर्थात् सदानों का भी विकास हो सके। आदिवासी महिलाओं के लाइफ स्टेटस में प्रगति, शिक्षा योजना मात्र लागू करने से संभव नहीं हो सकता अपितु इनके उत्थान के लिए अलग से योजना सरकार को लाना चाहिए। इसी प्रकार सदान महिलाओं के लिए भी होना चाहिए।

आदिवासी समाज में परम्परागत शिक्षा ट्राइबल नारियों की प्रगति के लिए पर्याप्त नहीं होता है, इनके लिये समय–समय पर कल्याणकारी योजनाओं के लिए शिविर आयोजित किये जाने चाहिए, जिससे एक ओर इनका प्रशिक्षण होगा, वहीं दूसरी ओर इन्हें रोजगार प्राप्त करने के लिए समान अवसर खुलेंगे। आदिवासी एवं सदानों के आर्थिक उन्नतिकरण हेतु यह जरूरी है कि उन्हें वोकेशनल एजुकेशन अनिवार्य रूप से दी जाये। इतना ही नहीं इन सभी के लिए शिक्षा पद्धति में परिवर्तन करना आवश्यक है और उनके लिए नई शिक्षा नीति लागू करना चाहिए। शोध–प्रबंध पूर्ण होने के बाद यह इतिहास, शिक्षा विभाग, समाज, अनुसंधानकर्ता एवं पाठकों के लिए उपयोगी होगा।

संबंधित संदर्भ–सूची (Related references):

1. ग्रोवर, बी. एल., यशपाल एवं मेहता, अलका, *''आधुनिक भारत का इतिहास ''*, नई दिल्ली, एस. चंद. एंड कम्पनी लि., 2006, पृष्ठ 254

2. महतो, एस., *''हन्ड्रेड इयर्स ऑफ द क्रिश्चियन मिशन इन छोटानागपुर'',* राँची, गॉस्सनर प्रेस, 1968, पृष्ठ 221

3. साहु, बिरेन्द्र, *''झारखण्ड के सदानों का इतिहास''*, राँची, झारखण्ड झरोखा, 2015, पृष्ठ 5

4. वीरोत्तम, वी., *''झारखण्डः इतिहास एवं संस्कृति ''*, पटना, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2016, पृष्ठ 577

5. अम्बष्ट, जी. पी., *''बिहार दर्पण'',* राँची, काथलिक प्रेस, 1940, पृष्ठ 21

6. वीरोत्तम, वी., *''झारखण्डः इतिहास एवं संस्कृति'',* पटना, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2016, पृष्ठ 578

7. बोबेन, एफ. जे., *''फादर कंस्टाट लिवेन्स ए पास्टल ऑफ छोटानागपुर'',* राँची, काथलिक प्रेस, 1949, पृष्ठ 114

8. वीरोत्तम, वी., *''झारखण्डः इतिहास एवं संस्कृति'',* पटना, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2016, पृष्ठ 577–578

9. वीरोत्तम, वी., *''झारखण्डः इतिहास एवं संस्कृति ''*, पटना, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2016, पृष्ठ 578–579

10. सिंह, नागेश्वर, *''हिन्दी शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में ईसाई मिशनरियों का योग'',* राँची, पुस्तक लोक प्रकाशन, 1985, पृष्ठ 149

11. उराँव, प्रकाश चंद्र, *''एडुकेशन ऑफ ट्राईबल वोमेन'',* राँची, बिहार जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, 1993, पृष्ठ 77

12. साहु, बिरेन्द्र, *''झारखण्ड के सदानों का इतिहास'',* राँची, झारखण्ड झरोखा, 2015, पृष्ठ 91–92

13. कुमार, एन., *''राँची डिस्ट्रिक्ट गजेटियर'',* पटना, बिहार सरकार, 1970, पृष्ठ 173

14. पाण्डेय, जी. डी., *''ए स्टडी ऑफ बैकवर्ड कम्यूनिटीज एन ए रूलर एरिया'',* कलकता, एशिया पब्लिसिंग हाउस, 1993, पृष्ठ 218

15. उराँव, प्रकाश चंद्र, *''एडुकेशन ऑफ ट्राईबल वोमेन'',* राँची, बिहार जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, 1993, पृष्ठ 77–78

16. अहमद, जियाउद्दीन, *''बिहार के आदिवासी''*, दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास, 1997, पृष्ठ 124–125

17. वीरोत्तम, वी., *''झारखण्डः इतिहास एवं संस्कृति''*, पटना, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2016, पृष्ठ 582

18. वर्मा, उमेश कुमार, *''बिहार का जनजातीय जीवन''*, वाराणसी, किशोर विकास निकेतन, 1931, पृष्ठ 69

19. प्रसाद, एस., *''ट्राइब्ल एडुकेशन इन बिहार''*, राँची, बिहार ट्राइबल रिसर्च इंस्टीच्यूट, 1961, पृष्ठ 204–205

20. साहु, बिरेन्द्र, *''झारखण्ड के सदानों का इतिहास'*', राँची, झारखण्ड झरोखा, 2015, पृष्ठ 192–193

21. खलखो, आभा, *''हिस्ट्री ऑफ एडुकेशन इन झारखण्ड''*, राँची, एस. के. पब्लिशिंग कंपनी, 2010, पृष्ठ 54–55